माघकृत शिशुपालवधम् में वर्णित समाज-व्यवस्था का स्वरूप

सुषमा देवी*

प्रस्तुत शोध-पत्र का विषय ''माघकृत शिशुपालवधम् में वर्णित समाज-व्यवस्था का स्वरूप'' है, जिसके अन्तर्गत शिशुपालवधम् नामक महाकाव्य में वर्णित समाज के स्वरूप को व्याख्यायित करने का प्रयास किया गया है, माघ की एकमात्र रचना शिशुपालवधम् बृहत्त्रयी में परिगणित की जाती है। यद्यपि माघ ने महाभारत के सभापर्व को आधार बनाकर शिशुपालवधम् नामक महाकाव्य की रचना की है। वेदव्यासकृत महाभारत भारतीय सभ्यता, संस्कृति, ज्ञान-विज्ञान व आदर्शपूर्ण आख्यानों का प्रतिनिधि ग्रन्थ है।

धर्मे चार्थे च कामे च मोक्षे च भरतर्षभ।
यदिहास्ति तदन्यत्र यन्नेहास्ति न तत् क्वचित।।[1]

पुरुषार्थ चतुष्ट्य (धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष), ज्ञान, भक्ति, उपसना, कर्मकाण्ड और धर्मोपदेश समस्त ज्ञान और जीवन-दर्शन की व्याख्या की गई है। यह रचना भावी कवियों के लिए उसी प्रकार आश्रय होगा जिस प्रकार प्राणियों के लिए मेघ-सर्वेषां कवि मुख्यानामुपजीव्यो भविष्यति। पर्जन्य इव भूतानामक्षयो भारतद्रुमः।। महाभारत के नामकरण का उल्लेख मिलता है- **''महत्त्वाद् भारवत्वाच्च महाभारतमुचाते''** अर्थात् महत्त्व और भार (आकार की विशालता) के कारण यह महाभारत कहा गया।[2] महाभारत-समय-500 ई. पू और माघ का समय -675 ई.पू. महाभारत में कतिपय परिवर्तन भी हुए जिसमें महाभारत के तीन पृथक्-पृथक् नामों का उल्लेख है-

ग्रन्थ नाम	कर्ता	श्लोक संख्या	वक्ता-श्रोता	अवसर
जय	व्यास	8800	व्यास-वैशम्पायन	धर्म-चर्चा
भारत	वैशम्पायन	24000	वैशम्पायन-जनमेजय	नागयज्ञ
महाभारत	सौति	1 लाख	सौति-शौनक आदि	नैमिषारण्य में यज्ञ

महाभारत वर्ण्य विषय- महाभारत को इतिहास पुराण के साथ ही आख्यान कहा गया है। महाभारत 18 पर्वों में विभक्त है इसमें कौरवों-पाण्डवों के वंश के वर्णन से लेकर उनके युद्ध तथा पाण्डवों के स्वर्गारोहण तक की कथा का वर्णन है। 18 पर्व हैं- आदि, सभा, विरात, उद्योग, द्रोण, कर्ण, शल्य, सौप्तिक, स्त्री, शान्ति, अनुशासन, अश्वमेध, आश्रमवासी, मौसल, महाप्रास्थानिक और स्वर्गारोहण। आदि पर्व में चन्द्रवेंश के विस्तृत इतिहास तथा कौरवों की उत्पत्ति का वर्णन, सभा पर्व में द्यूतक्रीडा। महाभारत आख्यान-नलोपाख्यान, शकुन्तलोपाख्यान, रामोपाख्यान, मत्स्योपाख्यान, सावित्री-उपाख्यान तथा शिवि-उपाख्यान। महाभारत को ज्ञान और धर्म का विश्वकोश कहा गया है, जीवनदर्शन का प्रतिपादन किया गया है, वर्णाश्रम धर्म और निष्काम कर्म का अनुपालन गीता का

**ICSSR, PDF, संस्कृत एवं प्राच्यविद्या अध्ययन संस्थान, जवाहरलाल नेहरू विष्ठवविद्यालय, नई दिल्ली-110067*